IJRESS Volume 3, Issue 7 (July 2013) ISSN: 2249-7382

International Journal of Research in Economics & Social Sciences 82 http://www.euroasiapub.org

राजनीति तथा जाति आन्दोलन
नवीन कुमार
, विभाग
ल0 ना0 मि
दरभंगा
आधुनिक भारतीय राजनीति में जातिवाद एक महत्वपूर्ण कारक है।भारत में जातिवाद ने न केवल यहां कि आर्थिक, समाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक प्रवृतियों को ही प्रभावावित किया है बल्कि राजनीति को भी पूर्णरूप से प्रभावित किया है। राजनीति मे जाति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । केन्द्र ही नही राज्य स्तरीय राजनीति भी जातिवाद से प्रभावित है जो लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए बहुत ही घातक है। भारतीय राजनीति के प्रमुख मुद्दा में जातिवाद सर्वोपरि है जातिवाद किसी न किसी प्रकार हमारी राजनीति को प्रभावित करती है ।
हमारे समाज में एक बडी ही व्यापक
और मुख्य भूमिका जाति का प्राचीन काल से ही रही है। ये समाज के ऐसे वर्ग है जो अपना एक अलग महत्व र
आए कहा से इनकी जड में जातिवाद ही है। भारत में ही नही बल्कि सम्पूर्ण व्याप्त है जो एक गम्भीर
सामाजिक कुरीति है । जाति व्यवस्था में सबसे बडा अन्तर यह है कि वर्ण का निर्धारण का पा्रचीन काल में व्यवसाय से होता था जबकि जाति का

प्रो0 रूडोल्फ के अनुसार भारत
राजनितिक लोकतंत्र के सन्दर्भ में जाति वह धूरी है जिसके माध्यम से नवीन मूल्यों और तरीको की खोज की जा रही है। यर्थाथ में यह एक ऐसा माध्यम बन गया है कि इसके जरीये भारतीय लोकतांत्रिक राजनीति की प्रक्रिया से जोड़ा जा सकता है। प्रो0 रजनी कोठारी अपनी पुस्तक ष्कास्ट इन इंडियन पॉलिटिक्सष्

fd;k g| mudk er g| fd vDlj ;g iश्न पूछा जाता है कि भारत में tkfr iFkk [kRe gks jgh g\

lekt ds fofHkUu oxksZ rFkk tkfr;ks का समर्थन पाने के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता उन सब संस्थानों के f[kykQ FkA ftudh izofr Hkkjrh; turk dks foHkkftr djus dks FkhA nfyrks ds eIlhgk dgs tkus okys ckck lkgc MkO Hkhe jko vEcsndj tks Lo;a ,d nfyr Fks viuk lkjk thou tkfrxr tUe ds f[kykQ yMus es yxk fn;k A mUgksaus vf[ky Hkkjrh; nfyr l?k fd LFkkiuk blh mnsश्य ls fd rkfd nfyrks es tkxfr dh Hkkouk dk fodkl gks lds A vuqlfpr tutातियों के कई अन्य नेताओं ने अखिल भारतीय दलित वर्ग परिषद् ¼lfefr½ dh LFkkiuk dhA nf{k.k Hkkjr es xSj ckge.kks us Hkh chlch lnh के तीसरे दशक के दौरान ब्राहम.kks }kjk viuh mij ykn;h x;h fu;kX;rkvks के खिलाफ संघर्ष करने के लिए आत्म सम्मान आन्दोलu pyk;k lkjs Hkkjr में मंदिर प्रवेश पर तथा इसी तरह अन्य प्रतिबंधो के विरोध में दलित tkfr;ks us lR;kxzg vkUnksyu pyk;A chO vkjO vEcsndj viuh eR;q ds ckn nfyrks के लिए एक आदर्श के रूप में उभरे है।

tkfr O;oLFkk ds vuqlkj iR;sd O;fDr dk ;g drO; Fkk fd og viuh tkfr ds lnL;ks ls gh vf/kdre lEiर्क बढायें उच्च जातियो की श्रेष्ठता में विश्वास रखें और निम्न जातियों ls njh cuk;s j[kA vkt ds vk/kfud jktuhfrd O;oLFkk ds vuqlkj tkfr;ks viuh LokFkZ dks iwjk djus gsrq viuh tkfr dk ekufld :i es viuk i{k es djrs gA 1952 es igyh ckj ykd lHkk pquko gvk Fkk ml le; dh jktuhfr es nfyrks dh dksbZ [kkl Hkkxhnkjh ugh Fkh A jktuhfr es nfyr vkj vkfnokfl;ks dh okV dh rkdr dk egRo dk ,glkl ugh Fkk A Hkkjr es pquko vfHk;ku es tkfrokn dks lk/ku ds :i es viuk;k tkrk gA iR;klh ftl fuokpu {ks= ls pquko yMs jgk gkrk g ml {ks= es tkfrokn fd Hkkouk dk iz;kx mdlk;k tkrk gA rkfd lEcfU/kr iR;klh dh tkfr ds ernkrkvks dk i.k leFku ikIr fd;k tk lds A

lHkh jktuhfrd nyk }kjk ;g ekuk tkrk g fd jkT; Lrjh; e=heMyk में प्रमुख जाति का मंत्री आवश्य होना चाहिए। केवल प्रांतीय स्तर पर भी ;g Hkkouk dke djrh gA e;j d vuqlkj tkfr;k lxBu jktuhfr egRo d nook d :i e iro= g A

vk/kfud jktuhfrd 0;oLFkk e dkbZ Hkh jkT; ,lk ugh g tk tkfrokn l iHkkfor u gk A fcgkj] itkc] हरियाण, राजस्थान, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र आदि सभी राज्यों की राजनीति पर जातिवाद स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। जाति के आधार पर भेदभाव Hkkjr e Lor=rk l igy fo}eku Fkk A ysfdu Lor=rk d ckn itkr= dh LFkkiuk gku l le>k x;k fd tkfrxr HkknHkko lekIr gk tk;xk ysfdu ,lk ugh gk ldk A jktuhfr lLFkk;s Hkh bl l iHkkfor g, ugh jg ldk A ftld dkj.k tkfr dk jktuhfr dj.k gk x;k A tkfr dk राष्ट्रीय एकता समkftd lkEiznkf;d lnHkko ,o lejlrk dk fuekZ.k dju gr vk/kkj ugh cuk;k tk ldrk gA

भारतीय संविधान द्वारा अस्पृश्यता को ydj vud dkuu cuk; x; ijUrq tkfrfcghu lekt dh lLFkkiuk संविधान की अन्तर आत्मा नही बन पायी । अस्पृश्यता समाप्त कर दी गयी । ijUrq tkfr 0;oLFkk cuh jgh A vu0 17 dk vEcsndj }kjk fd;k x;k ik:i ;g Fkk fd jx] tUe] 0;fDr] ifjokj] /kkfeZd] :<hoknhrk vkj jhfr रिवाज से उत्पन्न किसी विशेषा अधिाकार या निर्योग्यता को समाप्त किया tkrk g A ijUrq bl u rk ik:i lfefr u Lohdkj fd;k vkj ugh lfo/kku lHkk u Lohdkj fd;k fcuk prqj o.k ;k tkfr dk uke fy, अम्बेदकर ने इन पर आधारित विशेषा अधिाकारो या निर्याग्यताओं को lekIr fd;k Fkk A vkj ;fn mlLohdkj fd;k x;k gksrk rks og lekftd lerk ;k lekftd U;k; dh vko/kkj.kk d T;knk lehi gkrk A वर्तमान अनु0 17 डॉ0 के0 एम0 मुंशी के प्रारूप ij vk/kkfjr gA bld iwo 1930 के दशक में मंदिर प्रवेश के लिए हरिजनों को प्रदान की जाने वाली व्यवस्था पर प्रतिक्रिया व्यक्त करतें हुए अम्बेदकर ने स्पष्ट किया था यदि

fgUnq /keZ mudk /keZ gksuk gS rks mls lekftd ,drk dk /keZ gksuk gksxk A ek= fgUnq lfgrk dk lसोधन कर मंदिरो में प्रवेश दिलाना प्रयाप्त नही है। आवश्यक्ता है कि जाति व्यवस्था तथा अस्पृश्यता के जनक चतुर o.kZ ds fl}kUr dks lekIr fd;k tk;s A MkO vkj0 lh0 etenkj us अपनी पुस्तक स्ट्रग्ल फीडम में स्पष्ट किया है कि उसका मात्र संतोष जनक mrj ;g gks ldrk Fkk fd rोन हजार वर्षा से पुरानी व्यवस्था एक दिन में lekIr ugh gksxh vkj blds fy, iz;kl tkjh jgsxk A

iR;sd jkT; esa nfyr vYi&la[;d gS tks fofHkUu tkfr;ksa ds lkFk fefJr tula[;k oky s leqnk;ksa ds ykxksa ds lkFk jgrs gSA ftldk vFkZ ;g gS fd pquko ds le; os mu fuokZpu {ks=ksa esa Hkh fu.kkZ;d iHkko Mky ldrs gSA l?k ds lHkh jkT;ksa esa vkSj gj राज्यों के प्रत्येक जिले में लगभग दस प्रतिशत से बीस प्रतिशत के बीच उनका वोट है। इसलिए राजनीतिक दलो को अधिकांश लोकसभा और fo/kku lHkk fuokZpu {ks=ksa esa nfyr fgrksa dk /;ku j[kuk iMrk gSA yxHkx rhu lkS fuokZpu {ks=ksa ds fu.kZ; esa egRoiw.kZ Hkwfedk dk fuoZgu djrs gS A

jkT;ksa esa nfyrksa dks rdjhcu ,d gh rjg ds lajpukRed ned dk lkeuk djuk iMk gSA bl leku vuqHko के कारण राज्य और राष्ट्रh; Lrj ij nfyrksa dh xksycUnh c<kus esa enn feyh gSA bldk dkj.k ;g gS fd tkfr 0;oLFkk iwjs Hkkjr esa ,d gh rjg से कार्य करती है। दक्षणी राज्यों के गॉव के तरह उतरप्रदेश के गॉवो में भी nfyrksa dks lcls fuEu dkfV dk dk;Z fn;k tkrk gSA mUgsa mPp tkfr dh cLrोयों से दूर बसने पर मजबूर किया जाता है। उन्हे दूषित जल स्त्रोतों से ही पानी लेने की अनुमति दी जाती है और मंदिर पर प्रवेश पर रोका जाता gSA blfy, os xkao ftyksa vkSj jkT;ksa ds chp {kSfrt ,d tqVrk vkSj tqjko dk fodkl dj lds A

tkfr iFkk ds dkj.k lekt VqdMksa esa बट गया व्यक्ति व्यक्ति के बीच भेद भाव बढता गया , अहंकार और द्वेष के

IJRESS Volume 3, Issue 7 (July 2013) ISSN: 2249-7382

International Journal of Research in Economics & Social Sciences 86 http://www.euroasiapub.org

फलस्वरूप भारतवासी कभी एक नही हो सके । फलस्वरूप भारतवासियों को आक्रमणकारियांे का सामना करना परा । अतिपिछड़े और
दलित एक छोटी संख्या वाली जातियॉं है और इनक
जॅंहा-तहॉं फैला हुआ है और इनकी इस अवस्था के कारण लोकतांत्रिक राजनीतिक में या चुनावों में इनका कोई खास योगदान नही रहता है। ये ज्यादा समय अपनी जीविकोपार्जन की समस्याए को सुलझाने में लगे होने के कारण ज्यादा समय राजनीतिक चुनावो
के कारण भी इन में कोई बडा राजनीतिक नेनृत्व विकसित नही हो पाता है। आधुनिक काल में धीरे धीरे सरकारी
योजनाओ का लाभ लेते हुए इनमें चेतना जागृत हो रही है। इनका रूझान हा है। जिससे राजनीति में भी
इनकी भागीदारी बढ रही है। धीरे -धीरे ये संगठित हो कर एक बरे वोट बैंक के रूप में तबदील हो रहे है। समय के साथ साथ अब पिछडी जातियों को विधान सभा चुनाव में भी टिकट दिए जा रहे है।
जाति व्यवस्था भेदभाव तथा सामाजिक
स्तरीकरण के सिद्वांतो पर आधारित है। जाति व्यवस्था ने सामाजिक एवं आर्थिक असमानता को उत्पन्न किया है यह अन्तः विवाह के नियमो पर

को एक नया आधार प्राप्त हुआ । फलतः जाति आन्दोलन का उद्भव तथा विकास हुआ । स्वाध्ीान भारत में जाति आन्दोलन का राजनीतिकरण किया गया । विभिन्न राजनीतिक दलो के द्वारा वोट बैंक के द्वारा विभिन्न जातियों

की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।
लोकतंत्र व्यक्ति का ईकाई मानता है न कि
किसी जाति या समूह को जाति और समूह के आतंक से मुक्त रखना ही लोकतंत्र का आग्रह है। लोकसभा तथा विधानमनडलों के लिए जातिगत

vk/kkj ij vkj{k.k dh 0;oLFkk izpfyr gSA dsUnz ,oa jkT;ksa dh ljdkjh ukSdfj;ksa rFkk inksUufr;ksa ds fy, Hkh tkfrxr vkj{k.k dk viuk;k x;k gSA gfjtuksa vkSj vuqlwfpr tkfr;ksa dks iz.;sd LFkku ij ;gka rd fd eafMdy vkSj bafTkfu;fjax] dkystksa esa fo/kkfFk;ksa dh Hkfrh;ksa ds fy, Hkh vkj{k.k fn;k x;k gSA vkj{k.k 0;oLFkk dks lekIr dj blds vk/kkj lkekftd vkSj vkfFkZd fLFkfr dks cuk;k tk, A tkfr iFkk Hkkjr esa gh ugha vfirq fo‍श्व के प्रत्येक देश में किसी न किसी रूप में अवश्य विधमान gSA fiNMh tkfr;ksa lafo/kku esa nh x;h vkj{k.k dh 0;oLFkk dk c<kuk gqrq ljdkj ij ncko Mkyrh gSA

स्पष्ट है कि जाति व्यवस्था में निश्चित rkSj ij vusd ifjorZu ifjyf{kr gq, gSA ijUrq bu reke ifjorZuksa ds बाबजूद जाति की वंशानुगत सदस्यता स्तरण तथा इसके सजातिये विवाह सम्बन्धी पक्षो में कोई विशेष परिorZu ugha gqvk gSA Hkkjrh; tkfr;ksa 0;oLFkk vk/kqfud ifjorZuksa ds lkFk vHkh Hkh viuh fujarjrk cuk;s gqvk gSA reke ifjorZuksa ds ckctwn ledkyhu Hkkjr esa tkfr 0;oLFkk viuk अनुकुलन की अदभुत क्षमता एवं लोकशाही में संख्याबल की महता के कारण viuh fujarjrk cuk;s gq, gSA vkt Hkh Hkkjr ds xzkeh.k lektksa esa 0;fDr dh igpku mldh tkfr ls gh gksrh gSA vkfFkZd ,oa राजनीतिक शक्ति के ikfIr dh gkSM esa fofHkUu tkfr;ksa ,drk dh txg ifrLikZ}kRed ,drk dk विकास हुआ है। शहरो में भी अपने स्वार्थ सिद्वि हेतु जातिवाद एक प्रमुख विधि के रूप में क्रियाशील है। हमारे देश के बुद्विजीवि और नेतागण इस lUnHkZ esa bZekunkjh ds lkFk lkps vkSj bl leL;k ,oa blls mRiUu leL;kvksa dk lek/kku dj lds A ftlds QyLo:i ykdrkaf=d 0;oLFkk viuk ewy Lo:i dks ikIr dj ldsA

lUnHkZ lwph&

1- Ambedkar Bhimrao Pakistan aur the Partition of India . Thackers publishers .

2- Srinivas M.N Religion and society among the corrags of South India . Oxford 1952

3- Swami Sahajanand sarswati . Rachnawali (selected works of swami Sahajanand Sarswati) Prakashan Sansthan Delhi 2003.

4- Constitution of India , Govt of India 1991.

5- M.N. Shri Nivasan Cast in Modern India.

6- Arvind Narayan Das Agrarian movements in India ; studies on 20th century Bihar (Library peasant studies) Roultledge Londan 1982